Edition : October 2022/006 Price : Free

मातृका MAATRIKA

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE

REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

Download Our Free "Satisar" Andriod app

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

Inside :-

Page 1 — Editor's Foreword

Page 2 — 1) Saints of Kashmir by A.K.Razdan
2) Surya Vandana by Akshita Damania

Page 3 — Isha Upnishad (Shaloka 4) by A.K.Razdan

Page 4 — 1) Aav Bahaar boz Bulbulo by Unknown
2) Collection of Single Verses By Shridhar Bhatt

Page 5 — 1) Temples Of Kashmir (Martand) by Vinod Tickoo
2) History of Sharada By Rakesh Kaul

Page 6 — 1) Guru Bakhti by Zinda Kaul
2) Ma Sharada- Poem by Prithivi Nath (Bakth)

Page 7 — Sharada Manuscript Transliteration by Shridhar Bhatt (Pary 1)

Page 8 — Bhartiya Pracheen Lipiyan by Kumud Hegde (continued. from previous edition)

Page 9 — 1) Dr. C.L. Raina's Book Launch
2) Feedback on book Launch by Upendra Ambardar

Page 10 — 1) Ksemaraja By Radha Ragunathan (continued. from previous edition)
2) Our Publications

Page 11 — 1) Kids Songs
2) Sharada Varnmala
3) Donation appeal
4)Artwork for the month on Social media.
5) Contact Details.
6) Activity Chart of previous month.

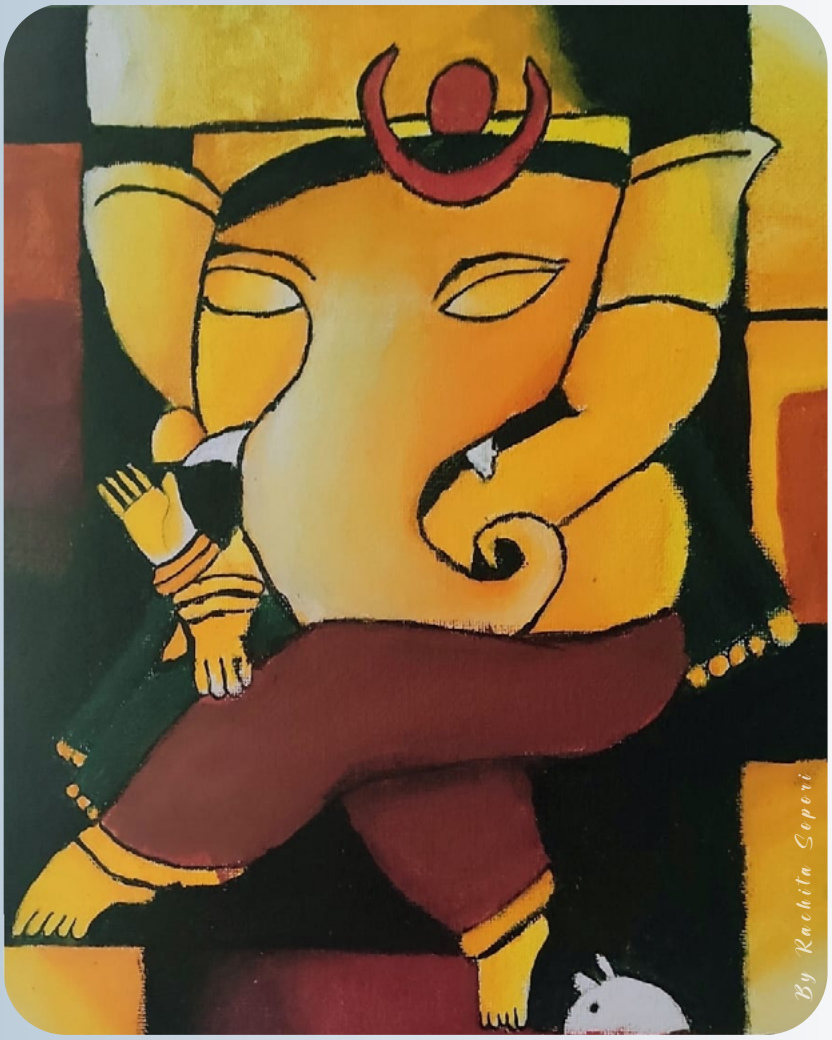

LEARN SHARADA TEACH SHARADA

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

PRESERVE-PROTECT - PROPAGATE

Chief Editor:- Kuldip Dhar
Cover picture :- Rachita Sapori
Designed by Sunil Mahnoori
Supporting Editors :- Veronica Peer, Parul Bradoo

By Kuldip Dhar

Editorial

प्रिय पाठकों,

नमस्ते ! कोर शारदा समूह ने शारदा लिपि को सभी तक पहुँचाने के लिये निरंतर प्रयास किये हैं ओर कर रही है। को० शा० टी० शारदा लिपी को पड़ाने, लिपि के लिये शिक्षक तयार एवं उपलब्ध कराने के लिए, ग्रंथों का लिप्यंतरण के लिये, लिपि के लिये यूनिकोड बनाने, लिपि का सहजता से सीखने या लिपि में लिखने के लिये एप बनाने में हमेशा आगे रही है। को० शा० टी० ने शारदा अक्षर ज्ञान के लिये पुस्तक व शारदा लिपि में कश्मीरी लिखने व पड़ने के लिये प्रवेशिका भी प्रकाशित की है।

इसी संदर्भ में पिछले माह, हमारी टीम के राकेशजी, सन्जेजी व विरोनिकाजी ने भारत के एक श्रेष्ठ नायक श्री अनुपम खेर जी से मुम्बई में मुलाक़ात की। उन्हें कश्मीरी शारदा प्रवेशिका की प्रति भी भेंट की। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि इस पुस्तक के लिए अनुपमजी ने ही प्रस्तावना लिखा है। हमें उन्हें अपने समुह के विभिन्न कार्यक्रमों से अवगत कराने का अवसर प्राप्त हुआ। उनहों ने इस में बडी रुची दिखाई। हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने अपना कीम्ती समय हमें दिया। इस मुलाक़ात को उनहों ने रेकार्ड किया व सोशल मीडिया पर भी पोस्ट किया। हमें आशा है कि इस से हमारे प्रयासों को ओर बल मिलेगा। हम इस के लिये अमुपमजी के कृरतज्ञ व आभारी हैं।

अगस्त व सितंबर महीने हम सभी भारतीय त्योहारों में अत्यंत व्यस्त रहे। अगस्त में २ तारीक को नागपंचमी, १२ को श्रावण पूर्णिमा वरक्षाबंधन, १५ को ७५वॉ स्वतंत्रता दिवस, १८ को ज़रमुसतम, १९ को जन्माष्टमी, ३१ को विनायक चतुर्थी , इसी प्रकार सितंबर में ९ को विनायक चतुर्दशी, १६ को रुपभवानी की पुन्यतिथि ओर २६ को पहली नवरात्रि। जहाँ हम ने नागपंचमी के दिन साँपों की पूजा (प्रकृति पूजा) की, रक्षाबंधन के दिन भाई-बहन के प्यार के त्योहार को मनाया व अमरनाथ यात्रा का समापन हुवा, स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूरे होने पर "हर घर तिरंगा " का उत्सव भी मनाया। भारत एक परमपरा व त्योहारों की भूमि है। इस से हम एक दूसरे के निकट पाते हैं। हम आशा करते हैं कि आप सभी ने हर्ष व उल्लास से त्योहारों का मनाया होगा ओर कोविड काल को एक बुरे सपने की तरह बूला होगा। आप की मंगल कामना करते हुये आप के सुझावों की प्रतीक्षा करें गे। जय हिंद।

PLAY VIDEO

प्रिय पाठकें,

नमस्ते !

कोर शारदा समूह ने शारदा लिपि के सभी तक पहुँचाने के लिये निरंतर प्रयास किये हैं ओर कर रही है। को० शा० टी० शारदा लिपी के पड़ाने, लिपि के लिये शिक्षक तयार एवं उपलब्ध कराने के लिए, ग्रंथों का लिप्यंतरण के लिये, लिपि के लिये यूनिकोड बनाने, लिपि का सहजता से सीखने या लिपि में लिखने के लिये एप बनाने में हमेशा आगे रही है। को० शा० टी० ने शारदा अक्षर ज्ञान के लिये पुस्तक व शारदा लिपि में कश्मीरी लिखने व पड़ने के लिये प्रवेशिका भी प्रकाशित की है।

इसी संदर्भ में पिछले माह, हमारी टीम के राकेशजी, सन्जेजी व विरोनिकाजी ने भारत के एक श्रेष्ठ नायक श्री अनुपम खेर जी से मुम्बई में मुलाक़ात की। उन्हें कश्मीरी शारदा प्रवेशिका की प्रति भी भेंट की। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि इस पुस्तक के लिए अनुपमजी ने ही प्रस्तावना लिखा है। हमें उन्हें अपने समुह के विभिन्न कार्यक्रमों से अवगत कराने का अवसर प्राप्त हुआ। उनहों ने इस में बडी रुची दिखाई। हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने अपना कीम्ती समय हमें दिया। इस मुलाक़ात को उनहों ने रेकार्ड किया व सोशल मीडिया पर भी पोस्ट किया। हमें आशा है कि इस से हमारे प्रयासों को ओर बल मिलेगा। हम इस के लिये अमुपमजी के कृरतज्ञ व आभारी हैं।

अगस्त व सितंबर महीने हम सभी भारतीय त्योहारों में अत्यंत व्यस्त रहे। अगस्त में २ तारीक को नागपंचमी, १२ को श्रावण पूर्णिमा वरक्षाबंधन, १५ को ७५वॉ स्वतंत्रता दिवस, १८ को ज़रमुसतम, १९ को जन्माष्टमी, ३१ को विनायक चतुर्थी , इसी प्रकार सितंबर में ९ को विनायक चतुर्दशी, १६ को रुपभवानी की पुन्यतिथि ओर २६ को पहली नवरात्रि। जहाँ हम ने नागपंचमी के दिन साँपों की पूजा (प्रकृति पूजा) की, रक्षाबंधन के दिन भाई-बहन के प्यार के त्योहार को मनाया व अमरनाथ यात्रा का समापन हुवा, स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूरे होने पर "हर घर तिरंगा " का उत्सव भी मनाया। भारत एक परमपरा व त्योहारों की भूमि है। इस से हम एक दूसरे के निकट पाते हैं। हम आशा करते हैं कि आप सभी ने हर्ष व उल्लास से त्योहारों का मनाया होगा ओर कोविड काल को एक बुरे सपने की तरह बूला होगा। आप की मंगल कामना करते हुये आप के सुझावों की प्रतीक्षा करें गे। जय हिंद।

कुलदीप धर

By A.K.Razdan

काश्मीर के महान सन्तों की श्रृंखला में इस मातृका में हाँगलगुण्ड के पण्डित मिर्ज़ाकाक

१७२१ ई० में माता रूपभवानी के निर्वान के कुच्छ वर्षों के बीतर ही काश्मीर देश में एक और संत कविकाप्राकट्यहुआ,यह थेपण्डितमिर्ज़ाकाक साहब जिन का जन्म कुकरनाग के पास हाँगलगुण्डगाँव मेंलगभग १७४९ ई०(पौष कृष्णपक्षप्रतिपदा १८०५ बिकर्मी संवत) को हुआ। ललद्यद, सहज़ानन्द एवं अलखिश्वरी रूपभवानी के बाद मिर्ज़ाकाक सॉब ने भी अपने आध्यात्मिक भाव वाखों मेंअभिव्यक्त करने की परंपरा को बनाए रखा।मिर्ज़ाकाकजीअपने पिता लस्सा पण्डितकीदूसरीसंतान थे।बाल्यावस्था से हीकाकसॉबसांसारिकजीवनसेविमुख रहेऔरगृहस्थ जीवन के कार्य में उनकी कोईदिलचस्पीन होनेके कारण उन कोउपनी मासी के घरअच्छिन गॉंवभेजागया।उन के बडे भाईभुल्लपण्डितनेग्रहस्त धारण करहाँगलगुण्ड मे घर को संभाला।पिता के देहांत केबादकाकसाहबहाँगलगुण्डलोट आए औरअपनेबडेभाई के साथरहने लगे।एक दिनउन के भाई ने उनको खेत जोतनेके लिएभेजा।दोपहर तक कुच्छ खेत जोत कर वे पेडकीछाँव मेबेठ कर माँ की प्रतीक्षा करनेलगे किमाँकबखानाले कर आएगी।माँ देर तक नहीं आई,इतनेमे काकसाहब कीआँख लग गई। जगत् जननी माँभवानीस्वपने मे आकर उन को अपने कर कमलों सेखीर खिलाई और उन की सारी भूख त्रप्त हो गई।थोडी देर बाद उन की अपनीमाँखाना लेकरआई।वह यह देख कर हैरान होगई की हल पर बैठा कौआ हल चला रहा थाऔर इतना बड़ा खेत इतनेकमसमयमेंकैसे पूरा जोता गया।माँ ने बालक मिर्ज़ाकाक को जगाया और खाना परोसनेलगी।बेटे ने कहा माँ तुम ने मुझेअभी अपने हाथों से पेट भरके खीर खिलाई अब मैं और नहीं खा सकता हूँ।माँ ने कहा मैं तो अभी अभी खाना लेकर आई हूँ मैं न कैसे तुम कोखिलाया। माँ ने सोंचा शायद देर से आने के कारण मेरा बेटा नाराज़ हैं, पर काक साहब समझ गये कि यह तोमाँ भवानीकावरदान है और उन पर देवी ने अनुग्रह वर्षा की है।उन्हें अपने भीतर व बाहर से चेतना के विस्तार का आभास हुआ और एक जड़ बालक एक जीवन्मुक्तसिद्ध संत बन गए और आज भी वे काश्मीर की संत परम्परा में एक बहुमूल्य मणि की तरह प्रज्वलितहैं। यह महान संत १८३५ ई० (ज्येष्ठ कृष्णपक्ष द्वितीय १८९१ विक्रमी सं०) को ब्रह्मलीन हुए।परम संत मिर्ज़ाकाकसाहब कीसमाधिआज भीहाँगलगुण्ड गाँव में ब्रंगी नदी के किनारे पर स्थित है।यहाँ परउनके भक्तजनएवं बहुत सारेश्रद्धालु हरवर्ष उनके जन्मदिन एवं पुण्यतिथि परयज्ञ का आयोजन करते हैं।काश्मीर की संत परम्परा को मेरा कोटि कोटि प्रणाम॥

𑇑𑇗𑇒𑇑 𑆆𑇐 𑆩𑆼𑆁 𑆩𑆳𑆠𑆳 𑆫𑆶𑆥𑆨𑆮𑆳𑆤𑆵 𑆑𑆼 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆳𑆤 𑆑𑆼 𑆑𑆶𑆗 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆧𑆵𑆠𑆫 𑆲𑆵 𑆑𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆢𑆼𑆯 𑆩𑆼𑆁 𑆍𑆑 𑆐𑆫 𑆱𑆁𑆠 𑆑𑆮𑆴𑆑𑆳𑆥𑇀𑆫𑆳𑆑𑆛𑇀𑆪 𑆲𑆶𑆄, 𑆪𑆲 𑆡𑆼 𑆥𑆟𑇀𑆝𑆴𑆠𑆩𑆴𑆫𑇀𑆘𑆳𑆑𑆳𑆑 𑆱𑆳𑆲𑆧 𑆘𑆴𑆤 𑆑𑆳 𑆘𑆤𑇀𑆩 𑆑𑆶𑆑𑆫𑆤𑆳𑆓 𑆑𑆼 𑆥𑆳𑆱 𑆲𑆳𑆀𑆓𑆬𑆓𑆶𑆟𑇀𑆝𑆓𑆳𑆀𑆮 𑆩𑆼𑆁𑆬𑆓𑆨𑆓 𑇑𑇗𑇔𑇙 𑆆𑇐(𑆥𑆿𑆰 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆥𑆑𑇀𑆰𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆥𑆢𑆳 𑇑𑇘𑇐𑇕 𑆧𑆴𑆑𑆫𑇀𑆩𑆵 𑆱𑆁𑆮𑆠) 𑆑𑆾 𑆲𑆶𑆄𑇅 𑆬𑆬𑆢𑇀𑆪𑆢, 𑆱𑆲𑆘𑆳𑆤𑆤𑇀𑆢 𑆍𑆮𑆁 𑆃𑆬𑆒𑆴𑆯𑇀𑆮𑆫𑆵 𑆫𑆶𑆥𑆨𑆮𑆳𑆤𑆵 𑆑𑆼 𑆧𑆳𑆢 𑆩𑆴𑆫𑇀𑆘𑆳𑆑𑆳𑆑 𑆱𑆾𑆧 𑆤𑆼 𑆨𑆵 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆄𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑 𑆨𑆳𑆮 𑆮𑆳𑆒𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁𑆃𑆨𑆴𑆮𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠 𑆑𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆵 𑆥𑆫𑆁𑆥𑆫𑆳 𑆑𑆾 𑆧𑆤𑆳𑆍 𑆫𑆒𑆳𑇅 𑆩𑆴𑆫𑇀𑆘𑆳𑆑𑆳𑆑𑆘𑆵𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆥𑆴𑆠𑆳 𑆬𑆱𑇀𑆱𑆳 𑆥𑆟𑇀𑆝𑆴𑆠𑆑𑆵𑆢𑆷𑆱𑆫𑆵𑆱𑆁𑆠𑆳𑆤 𑆡𑆼𑇅 𑆧𑆳𑆬𑇀𑆪𑆳𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳 𑆱𑆼 𑆲𑆵𑆑𑆳𑆑𑆱𑆾𑆧𑆱𑆳𑆁𑆱𑆳𑆫𑆴𑆑𑆘𑆵𑆮𑆤𑆱𑆼𑆮𑆴𑆩𑆶𑆒 𑆫𑆲𑆼𑆐𑆫𑆓𑆸𑆲𑆱𑇀𑆡 𑆘𑆵𑆮𑆤 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑇀𑆪 𑆩𑆼𑆁 𑆇𑆤𑆑𑆵 𑆑𑆾𑆆𑆢𑆴𑆬𑆖𑆱𑇀𑆥𑆵𑆤 𑆲𑆾𑆤𑆼𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆇𑆤 𑆑𑆾𑆇𑆥𑆤𑆵 𑆩𑆳𑆱𑆵 𑆑𑆼 𑆔𑆫𑆃𑆖𑇀𑆗𑆴𑆤 𑆓𑆾𑆁𑆮𑆨𑆼𑆘𑆳𑆓𑆪𑆳𑇅 𑆇𑆤 𑆑𑆼 𑆧𑆝𑆼 𑆨𑆳𑆆𑆨𑆶𑆬𑇀𑆬𑆥𑆟𑇀𑆝𑆴𑆠𑆤𑆼𑆓𑇀𑆫𑆲𑆱𑇀𑆠 𑆣𑆳𑆫𑆟 𑆑𑆫𑆲𑆳𑆀𑆓𑆬𑆓𑆶𑆟𑇀𑆝 𑆩𑆼 𑆔𑆫 𑆑𑆾 𑆱𑆁𑆨𑆳𑆬𑆳𑇅 𑆥𑆴𑆠𑆳 𑆑𑆼 𑆢𑆼𑆲𑆳𑆁𑆠 𑆑𑆼𑆧𑆳𑆢𑆑𑆳𑆑𑆱𑆳𑆲𑆧𑆲𑆳𑆀𑆓𑆬𑆓𑆶𑆟𑇀𑆝𑆬𑆾𑆛 𑆄𑆍 𑆐𑆫𑆃𑆥𑆤𑆼𑆧𑆝𑆼𑆨𑆳𑆆 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆡𑆫𑆲𑆤𑆼 𑆬𑆓𑆼𑇅 𑆍𑆑 𑆢𑆴𑆤𑆇𑆤 𑆑𑆼 𑆨𑆳𑆆 𑆤𑆼 𑆇𑆤𑆑𑆾 𑆒𑆼𑆠 𑆘𑆾𑆠𑆤𑆼𑆑𑆼 𑆬𑆴𑆍𑆨𑆼𑆘𑆳𑇅 𑆢𑆾𑆥𑆲𑆫 𑆠𑆑 𑆑𑆶𑆗 𑆒𑆼𑆠 𑆘𑆾𑆠 𑆑𑆫 𑆮𑆼 𑆥𑆼𑆝𑆑𑆵𑆗𑆳𑆀𑆮 𑆩𑆼𑆧𑆼𑆜 𑆑𑆫 𑆩𑆳𑆀 𑆑𑆵 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆵𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆑𑆫𑆤𑆼𑆬𑆓𑆼 𑆑𑆴𑆩𑆳𑆀𑆑𑆧𑆒𑆳𑆤𑆳𑆬𑆼 𑆑𑆫 𑆄𑆍𑆓𑆵𑇅 𑆩𑆳𑆀 𑆢𑆼𑆫 𑆠𑆑 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆄𑆆, 𑆅𑆠𑆤𑆼𑆩𑆼 𑆑𑆳𑆑𑆱𑆳𑆲𑆧 𑆑𑆵𑆄𑆀𑆒 𑆬𑆓 𑆓𑆆𑇅 𑆘𑆓𑆠𑇀 𑆘𑆤𑆤𑆵 𑆩𑆳𑆀𑆨𑆮𑆳𑆤𑆵𑆱𑇀𑆮𑆥𑆤𑆼 𑆩𑆼 𑆄𑆑𑆫 𑆇𑆤 𑆑𑆾 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆑𑆫 𑆑𑆩𑆬𑆾𑆁 𑆱𑆼𑆒𑆵𑆫 𑆒𑆴𑆬𑆳𑆆 𑆐𑆫 𑆇𑆤 𑆑𑆵 𑆱𑆳𑆫𑆵 𑆨𑆷𑆒 𑆠𑇀𑆫𑆥𑇀𑆠 𑆲𑆾 𑆓𑆆𑇅 𑆡𑆾𑆝𑆵 𑆢𑆼𑆫 𑆧𑆳𑆢 𑆇𑆤 𑆑𑆵 𑆃𑆥𑆤𑆵𑆩𑆳𑆀𑆒𑆳𑆤𑆳 𑆬𑆼𑆑𑆫𑆄𑆆𑇅 𑆮𑆲 𑆪𑆲 𑆢𑆼𑆒 𑆑𑆫 𑆲𑆽𑆫𑆳𑆤 𑆲𑆾𑆓𑆆 𑆑𑆵 𑆲𑆬 𑆥𑆫 𑆧𑆽𑆜𑆳 𑆑𑆿𑆄 𑆲𑆬 𑆖𑆬𑆳 𑆫𑆲𑆳 𑆡𑆳𑆐𑆫 𑆅𑆠𑆤𑆳 𑆧𑆝𑆳 𑆒𑆼𑆠 𑆅𑆠𑆤𑆼𑆑𑆩𑆱𑆩𑆪𑆩𑆼𑆁𑆑𑆽𑆱𑆼 𑆥𑆷𑆫𑆳 𑆘𑆾𑆠𑆳 𑆓𑆪𑆳𑇅 𑆩𑆳𑆀 𑆤𑆼 𑆧𑆳𑆬𑆑 𑆩𑆴𑆫𑇀𑆘𑆳𑆑𑆳𑆑 𑆑𑆾 𑆘𑆓𑆳𑆪𑆳 𑆐𑆫 𑆒𑆳𑆤𑆳 𑆥𑆫𑆾𑆱𑆤𑆼𑆬𑆓𑆵𑇅 𑆧𑆼𑆛𑆼 𑆤𑆼 𑆑𑆲𑆳 𑆩𑆳𑆀 𑆠𑆶𑆩 𑆤𑆼 𑆩𑆶𑆙𑆼𑆃𑆨𑆵 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆲𑆳𑆡𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆥𑆼𑆛 𑆨𑆫𑆑𑆼 𑆒𑆵𑆫 𑆒𑆴𑆬𑆳𑆆 𑆃𑆧 𑆩𑆽𑆁 𑆐𑆫 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆒𑆳 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆷𑆀𑇅 𑆩𑆳𑆀 𑆤𑆼 𑆑𑆲𑆳 𑆩𑆽𑆁 𑆠𑆾 𑆃𑆨𑆵 𑆃𑆨𑆵 𑆒𑆳𑆤𑆳 𑆬𑆼𑆑𑆫 𑆄𑆆 𑆲𑆷𑆀 𑆩𑆽𑆁 𑆤 𑆑𑆽𑆱𑆼 𑆠𑆶𑆩 𑆑𑆾𑆒𑆴𑆬𑆳𑆪𑆳𑇅 𑆩𑆳𑆀 𑆤𑆼 𑆱𑆾𑆁𑆖𑆳 𑆯𑆳𑆪𑆢 𑆢𑆼𑆫 𑆱𑆼 𑆄𑆤𑆼 𑆑𑆼 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆩𑆼𑆫𑆳 𑆧𑆼𑆛𑆳 𑆤𑆳𑆫𑆳𑆘 𑆲𑆽𑆁, 𑆥𑆫 𑆑𑆳𑆑 𑆱𑆳𑆲𑆧 𑆱𑆩𑆙 𑆓𑆪𑆼 𑆑𑆴 𑆪𑆲 𑆠𑆾𑆩𑆳𑆀 𑆨𑆮𑆳𑆤𑆵𑆑𑆳𑆮𑆫𑆢𑆳𑆤 𑆲𑆽 𑆐𑆫 𑆇𑆤 𑆥𑆫 𑆢𑆼𑆮𑆵 𑆤𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆓𑇀𑆫𑆲 𑆮𑆫𑇀𑆰𑆳 𑆑𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆇𑆤𑇀𑆲𑆼𑆁 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆨𑆵𑆠𑆫 𑆮 𑆧𑆳𑆲𑆫 𑆱𑆼 𑆖𑆼𑆠𑆤𑆳 𑆑𑆼 𑆮𑆴𑆱𑇀𑆠𑆳𑆫 𑆑𑆳 𑆄𑆨𑆳𑆱 𑆲𑆶𑆄 𑆐𑆫 𑆍𑆑 𑆘𑆝 𑆧𑆳𑆬𑆑 𑆍𑆑 𑆘𑆵𑆮𑆤𑇀𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣 𑆱𑆁𑆠 𑆧𑆤 𑆓𑆍 𑆐𑆫 𑆄𑆘 𑆨𑆵 𑆮𑆼 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆑𑆵 𑆱𑆁𑆠 𑆥𑆫𑆩𑇀𑆥𑆫𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆍𑆑 𑆧𑆲𑆶𑆩𑆷𑆬𑇀𑆪 𑆩𑆟𑆴 𑆑𑆵 𑆠𑆫𑆲 𑆥𑇀𑆫𑆘𑇀𑆮𑆬𑆴𑆠𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆪𑆲 𑆩𑆲𑆳𑆤 𑆱𑆁𑆠 𑇑𑇘𑇓𑇕 𑆆𑇐 (𑆘𑇀𑆪𑆼𑆰𑇀𑆜 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆥𑆑𑇀𑆰 𑆢𑇀𑆮𑆴𑆠𑆵𑆪 𑇑𑇘𑇙𑇑 𑆮𑆴𑆑𑇀𑆫𑆩𑆵 𑆱𑆁𑇐) 𑆑𑆾 𑆧𑇀𑆫𑆲𑇀𑆩𑆬𑆵𑆤 𑆲𑆶𑆍𑇆 𑆥𑆫𑆩 𑆱𑆁𑆠 𑆩𑆴𑆫𑇀𑆘𑆳𑆑𑆳𑆑𑆱𑆳𑆲𑆧 𑆑𑆵𑆱𑆩𑆳𑆣𑆴𑆄𑆘 𑆨𑆵𑆲𑆳𑆀𑆓𑆬𑆓𑆶𑆟𑇀𑆝 𑆓𑆳𑆀𑆮 𑆩𑆼𑆁 𑆧𑇀𑆫𑆁𑆓𑆵 𑆤𑆢𑆵 𑆑𑆼 𑆑𑆴𑆤𑆳𑆫𑆼 𑆥𑆫 𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠 𑆲𑆽𑇅 𑆪𑆲𑆳𑆀 𑆥𑆫𑆇𑆤𑆑𑆼 𑆨𑆑𑇀𑆠𑆘𑆤𑆍𑆮𑆁 𑆧𑆲𑆶𑆠 𑆱𑆳𑆫𑆼𑆯𑇀𑆫𑆢𑇀𑆣𑆳𑆬𑆶 𑆲𑆫𑆮𑆫𑇀𑆰 𑆇𑆤𑆑𑆼 𑆘𑆤𑇀𑆩𑆢𑆴𑆤 𑆍𑆮𑆁 𑆥𑆶𑆟𑇀𑆪𑆠𑆴𑆡𑆴 𑆥𑆫𑆪𑆘𑇀𑆚 𑆑𑆳 𑆄𑆪𑆾𑆘𑆤 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆑𑆳𑆯𑇀𑆩𑆵𑆫 𑆑𑆵 𑆱𑆁𑆠 𑆥𑆫𑆩𑇀𑆥𑆫𑆳 𑆑𑆾 𑆩𑆼𑆫𑆳 𑆑𑆾𑆛𑆴 𑆑𑆾𑆛𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆳𑆩𑇆

By Akshita Damania

सूर्यवंदना / 𑆱𑆷𑆫𑇀𑆪𑆮𑆁𑆢𑆤𑆳

घोर तम से पीड़ित भू, भोर बन कष्ट मिटायो भानू॥१॥
भूधर को बलवान बनायो नभ की शोभा बढ़ायो भानू॥२॥
जनचर-जलचर प्राणमय सारे देखो चढ़त आयो भानू॥३॥
कैसी आभा मुख की पायी सब तेजोमय बनायो भानू॥४॥
घोर तम से पीड़ित भू, भोर बन कष्ट मिटायो भानू ॥

𑆔𑆾𑆫 𑆠𑆩 𑆱𑆼 𑆥𑆵𑆝𑆴𑆠 𑆨𑆷, 𑆨𑆾𑆫 𑆧𑆤 𑆑𑆰𑇀𑆛 𑆩𑆴𑆛𑆳𑆪𑆾 𑆨𑆳𑆤𑆷𑇆𑇑𑇆
𑆨𑆷𑆣𑆫 𑆑𑆾 𑆧𑆬𑆮𑆳𑆤 𑆧𑆤𑆳𑆪𑆾 𑆤𑆨 𑆑𑆵 𑆯𑆾𑆨𑆳 𑆧𑆞𑆳𑆪𑆾 𑆨𑆳𑆤𑆷𑇆𑇒𑇆
𑆘𑆤𑆖𑆫-𑆘𑆬𑆖𑆫 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆟𑆩𑆪 𑆱𑆳𑆫𑆼 𑆢𑆼𑆒𑆾 𑆖𑆞𑆠 𑆄𑆪𑆾 𑆨𑆳𑆤𑆷𑇆𑇓𑇆
𑆑𑆽𑆱𑆵 𑆄𑆨𑆳 𑆩𑆶𑆒 𑆑𑆵 𑆥𑆳𑆪𑆵 𑆱𑆧 𑆠𑆼𑆘𑆾𑆩𑆪 𑆧𑆤𑆳𑆪𑆾 𑆨𑆳𑆤𑆷𑇆𑇔𑇆
𑆔𑆾𑆫 𑆠𑆩 𑆱𑆼 𑆥𑆵𑆝𑆴𑆠 𑆨𑆷, 𑆨𑆾𑆫 𑆧𑆤 𑆑𑆰𑇀𑆛 𑆩𑆴𑆛𑆳𑆪𑆾 𑆨𑆳𑆤𑆷 𑇆

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वादधाति॥

"अपने वैकुण्ठधाम में स्थिर रहते हुए भी परमात्मा मन से अधिक रफता र वाले हैं और अन्य समस्त दौडने वालों को पीछे कर सकते हैं। शक्ति शाली देवता (इन्द्रियाँ) भी इस तक नहीं पहुँच पाते। एक स्थान पर रहते हुए भी वे वायु तथा वर्षा की पूर्ति करने वाले देवताओं को वश में रखते हैं। वे महानता में सब से महान हैं।"

बडे से बडा दार्शनिक (फिलास्फर) भी मानसिक चिन्तन द्वारा पर् मात्मा अर्थात पूर्ण पुरषोत्तम को नहीं जान सकता। वे तो केवल अ पने भक्तों द्वारा उनकी ईश्वरी कृपा से ही जाने जा सकते हैं। वे अप ने धाम, गोलोक में रहते हुए भी अपनी अपूर्व शक्तियों द्वारा एक ही समय अपनी रचना शक्ति के प्रत्येक भाग में पहुँच सकते हैं। यद्यपि उनकी शक्तियां अनेक हैं, तथापि उन्हें तीन प्रमुख श्रेणियों में वि भाजित किया जा सकता है - अन्तरंग (internal) शक्ति, तटस्थ (neu-tral) शक्ति तथा बहिरंगा (external) शक्ति। इन श्रेणियों में से प्रत् येक के हज़ारों लाखों हिस्से हैं। वायु, आकाश, वर्षा इत्यादि कुदरती संसाधनों को नियंत्रित करने वाला प्रमुख देवता परमपुरुष की निष्पक्ष शक्ति के अन्तर्गत आते है। यहभौतिक जगत (material world) ईश्वर की बहिरंग शक्ति का ही सृष्ट रूप है और आध्यात्मिक आकाश आन्तरंगा श्कति का रूप है। यद्यपि भगवान् तथा उन की शक्तियों में कोई अन्तर नहीं है, लेकिन यह कभी भी नहीं मान लेना चाहिए कि ये शक्तियाँ ही केवल परम सत्य हैं और परमेश्वर केवल निराका ररूप से व्याप्त है और उन का कोई साकार रूप नहीं होता। चूँकी सीरी शक्ति भगवान से प्रापत होती है, इसलिए प्रत्यक शक्ति का उपयोग भगवान की इच्छा पूरी करने में ही करना चाहिए, अन्य किसी कार्य में नहीं। सर्वशक्तिमान ईश्वर केवल ऐसी सेवा की मनोवृत्ति रखने वाले व्यक्ति द्वारा जाने जा सकते हैं॥ मनुष्य को बड़े बड़े शास्त्र स्रोतों से भगवान के आध्यात्म तत्त्व को सीखने का सदैव प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि दिव्यता का पूर्ण ज्ञानं केवल भगवान को ही है। संसार का प्रत्ये क अंश किसी विशेष शक्ति से सम्पन्न होता है जिस से वह परमेश्वर की इच्छानुसार कर्म करता है। चूँकि जीव भगवान का अंश है, उसमें भग वान की प्रेरणा शक्ति भी होनी चाहिए। जब भी काई अपनी प्रेरणा या स क्रिय शक्ति का उपयोग बुद्धि के द्वारा भलीभाँति यह समझते हुए करता है कि हर कार्य में भगवान की शक्ति है, तो वह अपनी मूल चेतना पुन: प् राप्त कर सकता है, जो माया या बहिरंगा शक्ति के कारण लुप्त हो गई थी। पूर्ण ज्ञान का अर्थ है भगवान के सभी लक्षणों को जानना और यह जान ना कि ये शक्तियाँ उनकी इच्छा से किस प्रकार कार्य करती हैं।

By Unknown

आव बहार बोज़ बुलबुलो / 𑆄𑆮 𑆧𑆲𑆳𑆫 𑆧𑆾𑆘𑇊 𑆧𑆶𑆬𑆧𑆶𑆬𑆾

आव बहार बोज़ बुलबुलो
सोन वलो बरयो शॉदी।
द्राव कठॖकोश ग्रज़ू पाद छलो
ज़रॖ बॖ क्यथो वन्दॖ की दॉदी,
वुज़ू न्यन्दॖरे वुन्यि हा छय सुलो।
.....सोन वलो
काव कुम्युर बेयि हा पोशॖनूलो,
आयि नालान ज़न फॅरियॉदी।
बोसॖ करान छय हा सुमबलो,
सोन वलो बरयो शॉदी।
सोन्थ आव तय नब गव खुलो,
बुतॖराच़ॖ प्यठॖ च़ोल फसॉदी।
टेंकॖबटॖनि तय विरकेम्य फलो,
सोन वलो बरयो शॉदी।

𑆄𑆮 𑆧𑆲𑆳𑆫 𑆧𑆾𑆘𑇊 𑆧𑆶𑆬𑆧𑆶𑆬𑆾
𑆱𑆾𑆤 𑆮𑆬𑆾 𑆧𑆫𑆪𑆾 𑆯𑆳𑆢𑆵𑇅
𑆢𑇀𑆫𑆳𑆮 𑆑𑆜𑆶𑆑𑆾𑆯 𑆓𑇀𑆫𑆘𑇊𑆷 𑆥𑆳𑆢 𑆗𑆬𑆾
𑆘𑇊𑆫𑆶 𑆧𑆶 𑆑𑇀𑆪𑆡𑆾 𑆮𑆤𑇀𑆢𑆶 𑆑𑆵 𑆢𑆳𑆢𑆵,
𑆮𑆶𑆘𑇊𑆷 𑆤𑇀𑆪𑆤𑇀𑆢𑆶𑆫𑆼 𑆮𑆶𑆤𑇀𑆪𑆴 𑆲𑆳 𑆗𑆪 𑆱𑆶𑆬𑆾𑇅
.....𑆱𑆾𑆤 𑆮𑆬𑆾
𑆑𑆳𑆮 𑆑𑆶𑆩𑇀𑆪𑆶𑆫 𑆧𑆼𑆪𑆴 𑆲𑆳 𑆥𑆾𑆯𑆶𑆤𑆷𑆬𑆾,
𑆄𑆪𑆴 𑆤𑆳𑆬𑆳𑆤 𑆘𑇊𑆤 𑆦𑆫𑆴𑆪𑆳𑆢𑆵𑇅
𑆧𑆾𑆱𑆶 𑆑𑆫𑆳𑆤 𑆗𑆪 𑆲𑆳 𑆱𑆶𑆩𑆧𑆬𑆾,
𑆱𑆾𑆤 𑆮𑆬𑆾 𑆧𑆫𑆪𑆾 𑆯𑆳𑆢𑆵𑇅
𑆱𑆾𑆤𑇀𑆡 𑆄𑆮 𑆠𑆪 𑆤𑆧 𑆓𑆮 𑆒𑆶𑆬𑆾,
𑆧𑆶𑆠𑆶𑆫𑆳𑆖𑇊𑆶 𑆥𑇀𑆪𑆜𑆶 𑆖𑇊𑆾𑆬 𑆦𑆱𑆳𑆢𑆵𑇅
𑆛𑆼𑆁𑆑𑆶𑆧𑆛𑆶𑆤𑆴 𑆠𑆪 𑆮𑆴𑆫𑆑𑆼𑆩𑇀𑆪 𑆦𑆬𑆾,
𑆱𑆾𑆤 𑆮𑆬𑆾 𑆧𑆫𑆪𑆾 𑆯𑆳𑆢𑆵𑇅

By Shridharji Bhatt

A collection of scriptures in single verse

All of us know - In Hinduism there are many big and famous Indic Texts like - Ramayana, Mahabharata and Bhagavata etc. Here such big scriptures are given in just one verse each. All the four verses are written in shardula vikridita / शार्दूल विक्रीडित वृत्: - Varna/ वर्ण chandas. We will have a look at all of them in our upcoming editions.

दशावताराः ||

मत्स्यः कूर्मवराहश्च नारसिम्हश्च वामनः
रामो रामश्च कृष्णश्च बौध्यः कल्कि नमोस्तुते

𑆢𑆯𑆳𑆮𑆠𑆳𑆫𑆳𑆂 ||

𑆩𑆠𑇀𑆱𑇀𑆪𑆂 𑆑𑆷𑆫𑇀𑆩𑆮𑆫𑆳𑆲𑆯𑇀𑆖 𑆤𑆳𑆫𑆱𑆴𑆩𑇀𑆲𑆯𑇀𑆖 𑆮𑆳𑆩𑆤𑆂 |
𑆫𑆳𑆩𑆾 𑆫𑆳𑆩𑆯𑇀𑆖 𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟𑆯𑇀𑆖 𑆧𑆿𑆣𑇀𑆪𑆂 𑆑𑆬𑇀𑆑𑆴 𑆤𑆩𑆾𑆱𑇀𑆠𑆶𑆠𑆼 ||

We prostrate -Ten incarnations of Lord Mahaavishnu - 1. Matsya 2. Koorma 3. Varaha 4. Nrusimha 5. Vamana 6. Parashurama 7. ShriRama 8. ShriKrishna 9. GoutamaBuddha 10. Kalki . The first five incarnations happened in Krutayuga, next two (sixth and seventh) were in Tretayuga, Krishnavatara in Dvaparayuga , Buddha and Kalki are in the present Kaliyuga.

By Vinod Tickoo

मारतंड या मटन / 𑆩𑆳𑆫𑆠𑆁𑆝 𑆪𑆳 𑆩𑆛𑆤

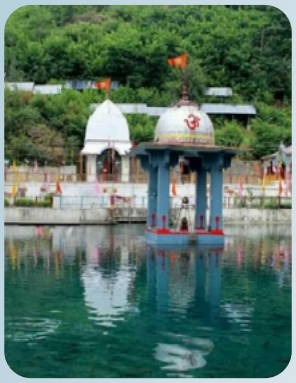

मार्तंड जो मटन के नाम से भी प्रसिद्ध है। मटन अनंतनाग ज़िले का एक प्रमुख नगर व तहसील है। यह एक ऐतिहासिक तीर्थस्थल है। यह अमरनाथ यात्रियों का एक मुख्य पडाव है। मटन का यह रसता सुरम्य पहलगाँव से होता हुवा अमरनाथ की पवित्र गुफा को जाता है। आज तक यहाँ के चशमों में पवित्र छडी का सनान होने के बाद ही अमारनाथ गुफा के लिया जाता है। यह तीर्थ स्थल मुख्य बाजार में स्थित है। भर्घशेखा माता (जो कि आधि शक्ति पीठ भी है) का मंदिर, मटन में स्थित चशमों (नागबल)के पीछे की पहाडी पर स्थित है। यह मंदिर में माता एक शिला के रूप में वास करती हें। यह बहुत ही प्राचीन मंदिर है। यहां की यात्रा साल मैं दो बार नवरात्रा के दिनों में होती है।मंदिर तक का रास्ता खडी डलान के कारण कठिन है। मार्तंड हिंदु मान्यता के अनुसार आठवाँ व अंतिम वैदिक सूर्यदेवता आदित्या है। उन का नाम उन की माता आदिती सेआया है।

यहां कश्मीर का एक मात्र सूर्य मंदिर है। दंतकथों व मार्तंड कथा पुस्तक से यह ज्ञात होता है कि मार्तंड आदिती के पुत्र थे जो कि ऋषि कष्यप की पतनी थीं। कशमीर का नाम ऋषि कष्यप से ही मिला है। ऋषि कष्यप को सतीसर झील को पानी से खाली करने का दायित्व सोंपा गया था ताकि जलौबवा दानव को मारा जा सके क्योंकि पानी की भीतर वह लगभग अमर था। क्रिषि कष्यप को इय के लिये अपने १३वें पुत्र, मार्तंड की सहायता चाहियेथी। उन का यह पुत्र अभी अंडे के रूप में ही था। माता शक्ति ने भगवान विशनु की सहाय्ता मांगी । भगवान विशनु ने सुधरशन चक्र से अंडे के दो टुकडे किये जो कि मार्तंड के दो चशमों व प्रकाश में परिवर्तित हुये। यह प्रकाश के कारण मार्तंड चशमों के चारों ओर चार शक्ति पीठों की स्थापना हुई। इन के नाम भर्घशेखा देवी,भीमा देवी, श्री बस्वती देवीव श्री भवानी देवी है। मार्तंड की भूमि ने हमें दो प्रसिद्ध व्यकति पंडित कृपाराम व कवि परमानंद दिये। पंडित कृपाराम जी ने कशमीरी पंडितूं को औरंगज़ेब से सुरक्षित रखा। उनहूंने सिखों के १०वें गुरु गुरु गोबिंद सिंग जी को संस्कृत सिखाई थी। ललद्यद ने भी मार्तंड की व्याख्या अपने वाकों में की है । मार्तंड एक पवित्र स्थान है जिस को गंगा के बराबर माना जाता है । यहाँ हर डाई साल के बाद मलमास बानमास में पितरों का श्राद्ध किया जाता है, इस में पूरे देश विदेश से लोग आते हैं । मार्तंड एक धार्मिक व सांस्कृतिक स्थल बहुत सदियों से रहा है ।

By Rakesh Kaul

Brief overview of the History of Sharada Script

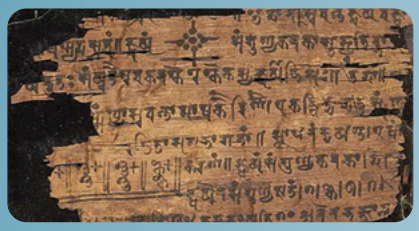

Sharada Lipi traces back to 3rd CE, as per the new evidence that has surfaced up lately. New carbon dating research commissioned by the University of Oxford's Bodleian Libraries into the ancient Indian Bakhshali manuscript, provides evidence that this manuscript can be dated to 3rd CE. Determining the date of the Bakhshali manuscript is of vital importance to the history of mathematics and study of early South Asian culture testifying to the subcontinent's rich and longstanding scientific tradition.

The Bakhshali manuscript uses an early stage of the Sharada script, and therefore, provides earliest record of this script. Thus, Sharada has existed much before Devanagari, but Devanagari has never been replacement for Sharada. Sharada is mother script to Gurumukhi, Landa and Takri scripts. The use of this script was at its prime between 8th and 12th century CE in Kashmir and neighbouring areas. This also happens to be the era when Kashmir was rich culturally and spiritually and was the hub of knowledge. This is the time when Sharada Peeth in Kashmir was a well recognized as a seat of learning and was famous all over India and in the neighbouring countries. Large number of books and scriptures were written in Sharada Script during this time. No wonder, there are an estimated 40,000 manuscripts written in Sharada script, which can be found in various libraries in India, United States, Canada and many European countries. Many must have got destroyed and some may be lying with some householders. These manuscripts are believed to be rich source of knowledge about mathematics, astrology, medicine and philosophy.

With the invasion of Muslim rulers and their establishment in India and particularly in Kashmir, Hindu literature including Sharada script faced a serious on slaughter. The script was forced out of usage and became almost extinct. The general population remained deprived of the knowledge of the script as well as the grand manuscripts that were written in this script. Only a minuscule of Hindu community who continued to use Sharada for writing horoscopes remained knowledgeable about this script.

By Master Zinda Kaul

Guru Bakti by Master Zinda Kaul

१ आमुन्न मनस रुन्न वासुना
ईश्वर सफल करिना सना।
२ एकांत किस गंहलिस अन्दर
उपरामु किस शिहलिस अन्दर
पम्पोशु पादन दून्य मलान
पनुनिस गॅरस बो आसुहा।
३ पूज़ायि विद(व्योद) कॆंह ज़ानु मा
लोलस निशद कॆंह मानु मा
छयपि च़ूरि कुनि म्यूठाह दिवान
लोत तथ खोरस बो आसुहा।
४ यॆन्न लाल अंछ वॆछ थावुवुन
अंछ टेन्टि रोस ओश त्रावुवुन
सॅन्दर मॅखुच कान्ती वुछान
तस सॉन्दरस बो (बु) आसुहा।
५ वांनी तसुंज़ विग्यानमय (विज्ञानमय)
ज़न साम गेवनस पानु दय
तन मन बंनिथ कन बोज़ुवुन
मोदुरिस सॅरस बो आसुहा।
६ सत शब्द नोन वेस्तारिहे
उदगीथ सॅर थोद खारिहे
करवुन मनन सादुल चवान
श्रवनुक सु रस बो आसुहा।
७ बूज़िथ श्रवन पादन प्योमुत
संसारु निश मॅकलिथ गोमुत
पुशुरिथ पनुन सोरुय ज़गथ
परमेश्वरस बो आसुहा।
८ वुज़ तातु वंन्य वंन्य गारिहेम
कर पंद्य हृदयस सारिहेम
ज़ल बिंद ज़न मीलिथ गोमुत
सॅख सागुरस बो आसुहा।

By Prithivi Nath (Bakth)

शारदा मांज आयि यञ्चकालिये लो /

शारदा मांज आयि यॆञ्चकालिये लो, रंगु पोशु माल लागय नांलिये लो
शारदा मांज आयि यॆञ्चकालिये लो, कंद नाबद बादाम डांलिये लो
शारदा मांज आयि यॆञ्चकालिये लो, अंस्य छि गामुत्य परुछेन्य वॅपरन मंज़
शारदा मांज करि सोन पानय संज़, तनु सॅ फेरान आंस बांल्य बालिये लो
शारदा मांज आयि यॆञ्चकालिये लो, आपदायव निश रछ थव खॅशहाल
दूर रूज़िथ असि मतु करतु पामाल, ज़ाल कठिनुक च़ठ कांल्य कालिये लो
शारदा मांज आयि यॆञ्चकालिये लो, मॆति रोज़तम हमेशय सुत्य सुती
भखती कुन च़ालि सितेजु कुती, लछ करोर छख छम चांनि चालिये लो
शारदा मांज आयि यॆञ्चकालिये लो

Book Launch

By CST

Secrets of Shri Kaadi Vidya , Mantra Vidhi Mimamsha- By Dr.Chaman Lal Raina

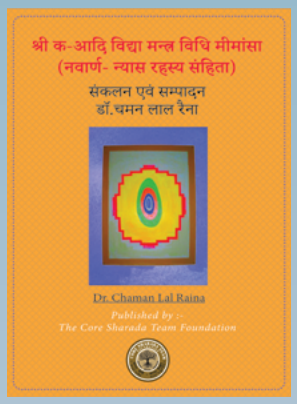

The book compiled and edited by Dr Chaman Lal Raina is dedicated at the Lotus feet of Ishwar Swaroop Swami Lakshman Joo Mahraj. The book is about Shri Kadi Vidyas Mantra Vidhi Mimansa, with the sub title of the Navaarn Nyasa Rahasya Samhitaa. This sacred treasure is for the Agamic devotees and researchers, on the Nyasa and the Kadi Vidya, focusing on the Kaulachara Paddhati.

The book has covered 18 chapters with the Foreword by Dr Rajendra Prasad the highly acclaimed Shakta Scholar and Editor of the Shri Vidya Mantra Mahayoga Trilingual Journal on the Agama Shastras.

The chapters deal with the

i. Sapta Aksharamayi Devi,
ii. Sapta Maatrika Svaroopa
iii. Sapta Matrika Rahasyam

All three is the research work of Dr. Raina is the Core spirit of the Kadi Vidya, followed by Pushpa Archana. Shri Chakra Pooja Paddhati is related to the Maatrika Poojanam.

iv. Praana Pratishtham related to Tvach skin, Maansa bodily tissues Medaa-- Aathii bones Ojas vital energy Antarmaatrika nyasa is related to the feeling of sensation in the head face, heart the feet all the fingers are being pulsated.

Srishti nyasa is the invoking of the Brahmi Shakti withinj. Sthiti Nyasa is the invocation of the Vaishnavi Shkti. Sanhaara Nyasa is for the Raudri aspect of the Mother Divinity. Kadi Vidya Nyasa is the invocation of the Shodashi Pooja, at the Shri Chakreswhwara. The Varnamala Adi to Ksha Khyantam is invoked within the Navaarna Yantra. The Lalita Trishati having its source in the Panchadashi Kaadi Mantra has 300 Guna Karma Shabda Sharia which is revolving around the Bija Akshara Hriim.

Feedback on book launch by Upendra Ambardar

It was both heartening and pleasing to listen to the on line book launch function on the topic of " Kaadi Vidya ",authored by the reputed writer cum researcher,linguist and Indologist Dr. Chamanlal Raina.

It was on 14th of August 2022.The programme anchored by Sh. Rakesh Kaul,had expert speakers of Dr.S.K.Sopori former V.C.J.N.U., Dr.C.Shekhar and Sh.Ram Krishan Jyotshi. It was equally gratifying to hear about "**Kaadi Vidya**",which was once in vogue in Kashmir but due to onslaught of turbulent times has now gone completely in oblivion and presently stands forgotten.Kashmir,only a few centuries back was one of the prime centre's of *"Kaadi Vidya*",which is a mystic knowledge,forming a part of Shri Vidya.The Kaadi Vidya Shakat sampradhaya had organized localities, both in Srinagar city and rural belt more so in some south kashmir pockets.

Shri Vidya and it's allied offshoot Kaadi Vidya is a tantric worship approach, in which the Goddess Lalita Tripurasundari,the great Goddess of the three worlds enjoys supremacy. Shri Vidya is an ancient powerful esoteric school of Shakti Tantarism, wherein Her mantra and Yantra ,commonly known as Shri Chakra enjoy prominence, during the pursuit of one's spiritual enllightment and metaphysical development. Shri Vidya has many paths of sadhna and Kaadi Vidya constitutes, one amongst them. Kaadi Vidya has it's own set of Nyasa,meditation form ,Mantra, Yantra and Kavachya.Kundalani jagran by awakening of the mystic chakras of the physical body,constitutes a part of this mystic mode of worship It's initiation time is usually midnight to Brahma Murtha.

Kaadi Vidya is a Panchadasakshra mantra and it's prime originator is said to be Lord Dakshinamurti .The great Goddess Lalita Tripurasundari is also known by the alternative names of Maharajana and Rajrajeshwari.In earlier times, Kaadi Vidya initiations was done only once in a year ,on the sanctimonious day of "**Hora Ashtami**",right at the holiest of the holy sathal of Chakrishwari at Hari Parbat, Srinagar.

The author Dr.Chaman Lal Raina has about forty books to his credit and is an acknowledged religious expert.He has mastered the Shiiva and Shakta scriptures from the traditional system of Kaadi Vidya of Kashmir. Presently, it is for the first time that Nayasa of Kaadi Vidya has been bought to the notice of general masses and Shakti upaska's. He is a distinguished scholar, having Masters in English and Hindi,graduation in Sanskrit, Honor's in Urdu, besides having done Doctorate on Shri Aurobindho's philosophy. He has taught at the Iqbalayat Institute of Kashmir University and has also worked as a visiting Professor at Yoga studies ,religion n sanskrit at Florida Int University, USA..His works include Shri Ragnya Sahasranama,kashmir Shakti tradition, Bhavani Sahasranama,Shri Sharda Sahasranama, Lalita Sahasranama stotrama,facets of Shri Chandi Nava Durga, Inner dimensions of Amrita Pritam and Trika Vaibhavam etc.

By Shridharji Bhatt

Guidelines for transliterating The Sharada script to Devanagari in case of Sanskrita language (Part 1)

Let us consider - A reasonably good example as shown below-

(In absence of the original manuscript it would have looked like as under in Sharada script.)

Let's transliterate line wise-

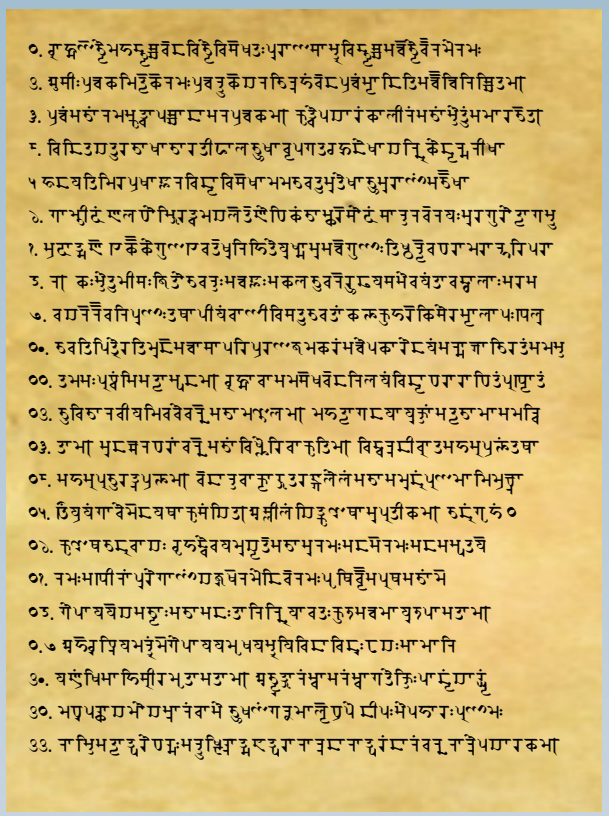

१. ब्राह्मणेभ्यो महद्भ्यश्च वेदविभ्यो विशेषतः । पुराणशास्त्रविद्भ्यश्च सर्वेभ्यो वै नमोनमः॥
२. आशीः पूर्वकमित्येके नमः पूर्वन्तु केचन । भिन्नहं वेदपूर्वं स्यादिति सर्वैर्विनिश्चितम्॥
३. पूर्वं सभां नमस्कृत्वा पश्चादासनपूर्वकम् । कृत्वोपचारं कालीनं सभां स्तोतुं समारभेत्॥
४. विदितचतुरभाषा भारती फालभूषा व्यपगतबहुदोषा चन्द्रिकोद्यन्मनीषा।
५. हृदयतिमिरपूषा ज्ञानविद्याविशेषा मम भवतु सुतोषा भूसुराणां सभैषा॥
६. गाम्भीर्यं जलधौ स्थिरत्वमचले तेजोधिकं भास्करे शौर्यं शान्तनवे नयः सुरगुरौ त्यागस्तु
७. सूर्यात्मजे । एकैको गुण एव तेषु निहितो युष्मासु सर्वे गुणाःतिष्ठन्त्येव धरामरान्हरिपरा-
८. न् कः स्तोतुमीशः क्षितौ ॥ भवन्तः सर्वज्ञाः सकलभुवने रूढयशसो वयं तावद्बालाः सरस-
९. वचने नैव निपुणाः । तथापीयं वाणी विशतु भवतां कर्णकुहरेकिशोरस्यालापः खलु
१०. भवति पित्रोरतिमुदे ॥ सर्वाशा परिपूरणक्षमकरं सर्वोपकारोदयं सन्मार्गाभिरतं समस्त
११. तमसः प्रध्वंसि सत्यास्पदम्। ब्रह्मावासमशेषवेदनिलयं विद्याधराराधितं प्रख्यातं
१२. भुविभानवीयमिव वो वन्दे सभामण्डलम् ॥ महत्यागदयायुक्तां सत्यभामासमन्वि-
१३. ताम् । सुदर्शनधरां वन्दे सभां विष्णोरिवाकृतिम् ॥ विद्वन्नदीव्रातसहस्रपूर्णं तथा
१४. सहस्रप्रभुरत्नपूर्णम् । वेदान्तवाक्यार्थतरङ्गलोलं सभासमुद्रं प्रणमामि मूर्ध्ना॥
१५. ॐ यूयं गावो मे दयथा कृशंचित् । अश्लीलं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् । भद्रं गृहं
१६. कृणुथ भद्रवाचः । बृहद्वो वयमुच्यते सभासु ॥ नमः सदसे । नमः सदस्पतये।
१७. नमः सखीनां पुरोगाणां चक्षुषे । नमो दिवे | नमः पृथिव्यै । सप्रथ सभां मे
१८. गोपाय । ये च सभ्याः सभासदः । तानिन्द्रियावतः कुरु । सर्वमायुरुपासताम्॥
१९. अहेबुध्निय मन्त्रं मे गोपाय ॥ यमृषयस्त्रयि विदा विदुः । ऋचः सामानि
२०. यजूंषि । साहिश्रीरमृता सताम् ॥ अभ्युत्थानं स्वासनं स्वागतोक्तिःपाद्यं चार्घ्यं
२१. मधुपर्काचमौच । स्नानं वा सो भूषणं गन्धमाल्ये धूपो दीपः सोपहारः प्रणामः ॥
२२. नास्ति सत्यात्परो धर्मः सन्तुष्टिर्नात्मजात्परा।नान्नदानात्परं दानं वन्दनान्नोपचारकम्

As per Language prescriptions, all Sanskrit Verses /Shlokas are written separately and the names of Chhandas, also identified and written as shown below.

१. ब्राह्मणेभ्यो महद्भ्यश्च वेदविभ्यो विशेषतः। पुराणशास्त्रविद्भ्यश्च सर्वेभ्यो वै नमोनमः ॥

आशीः पूर्वकमित्येके नमः पूर्वन्तु केचन । भिन्नहं वेदपूर्वं स्यादिति सर्वैर्विनिश्चितम् ॥ पूर्वं सभां नमस्कृत्वा पश्चादासनपूर्वकम् । कृत्वोपचारं कालीनं सभां स्तोतुं समारभेत् ॥ –**अनुष्टुप् छन्दः**

२.विदितचतुरभाषा भारती फालभूषा व्यपगतबहुदोषा चन्द्रिकोद्यन्मनीषा। हृदयतिमिरपूषा ज्ञानविद्याविशेषा मम भवतु सुतोषा भूसुराणां सभैषा ॥ **-मालिनीवृत्तम्**

३. गाम्भीर्यं जलधौ स्थिरत्वमचले तेजोधिकं भास्करे शौर्यं शान्तनवे नयः सुरगुरौ त्यागस्तु सूर्यात्मजे।
एकैको गुण एव तेषु निहितो युष्मासु सर्वे गुणाःतिष्ठन्त्येव धरामरान्हरिपरान् कः स्तोतुमीशःक्षितौ॥ **-शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्**

४. भवन्तः सर्वज्ञाः सकलभुवने रूढयशसो वयं तावद्बालाः सरसवचने नैव निपुणाः। तथापीयं वाणी विशतु भवतां कर्णकुहरे किशोरस्यालापः खलु भवति पित्रोरतिमुदे ॥ **-शिखरिणीवृत्तम्**

५. सर्वाशा परिपूरणक्षमकरं सर्वोपकारोदयं सन्मार्गाभिरतं समस्त तमसः प्रध्वंसि सत्यास्पदम्। ब्रह्मावासमशेषवेदनिलयं विद्याधराराधितं प्रख्यातं भुविभानवीयमिव वो वन्दे सभामण्डलम्॥ **-शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्**

६. महत्यागदयायुक्तां सत्यभामासमन्विताम्। सुदर्शनधरां वन्दे सभां विष्णोरिवाकृतिम्॥ **-अनुष्टुप् छन्दः**

७. विद्वन्नदीव्रातसहस्रपूर्णं तथा सहस्रप्रभुरत्नपूर्णम्। वेदान्तवाक्यार्थतरङ्गलोलं सभासमुद्रं प्रणमामि मूर्ध्ना॥ **-उपजातिछन्दः**

ॐ यूयं गावो मे दयथा कृशंचित्। अश्लीलं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्। भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः । बृहद्वो वयमुच्यते सभासु॥ नमः सदसे । नमः सदस्पतये। नमः सखीनां पुरोगाणां चक्षुषे। नमो दिवे । नमः पृथिव्यै । सप्रथ सभां मे गोपाय । ये च सभ्याः सभासदः । तानिन्द्रियावतः कुरु । सर्वमायुरुपासताम् ॥ अहे बुध्निय मन्त्रं मे गोपाय ॥ यमृषयस्त्रयि विदा विदुः । ऋचः सामानि यजूंषि । साहिश्रीरमृता सताम् ॥ **-वेदमन्त्रः**

८. अभ्युत्थानं स्वासनं स्वागतोक्तिः पाद्यं चार्घ्यं मधुपर्काचमौच। स्नानं वा सो भूषणं गन्धमाल्ये
धूपो दीपः सोपहारः प्रणामः॥ **-शालिनी**

९. नास्ति सत्यात्परो धर्मः सन्तुष्टिर्नात्मजात्परा। नान्नदानात्परं दानं वन्दनान्नोपचारकम् ॥ **-अनुष्टुप् छन्दः**

(to be continued..)

By Kumud Hegde

भारतीय प्राचीन लिपयः/ ಭಾರತೀಯಪ್ರಾಚೀನಲಿಪಯಃ

(continued from previous edition)

1. कृष्णयजुर्वेदस्य पञ्चमकाण्डस्य प्रथमप्रश्ने एवं वर्तते - "खलु वा एतद्यज्ञमुखं यर्ह्योनदाहुतिरश्नुते परिलिखति रक्षसमपहत्यै तिसृभिः परिलिखति..." इत्येवम्। "लिख अक्षरविन्यासे" इति धातोः निष्पन्नः लिखतीति शब्दः लिपेः अस्तित्वं स्पष्टयति।

2. चतुष्षष्टिकलासु "अक्षरकला" इत्यवर्तत, यया लिपिरासीदिति ज्ञायते।

3. नारदस्मृतौ एवमस्ति- "नाकरिष्यद्यदि ब्रह्मा लिखितं चक्षुरुत्तमम्। तत्रोऽयमस्य लोकस्य नाभविष्यच्छुभागतिः॥ ब्रह्मणः लेखनं लिप्या एव सम्भवतीत्याशयोऽस्य।

4. वरदराजः स्वीये व्यवहारनिर्णये लिखति- षाण्मासिकेति समये भ्रान्तिः सञ्जायते यतः। धात्राक्षराणि सृष्टानि पत्रारूढान्यतः पुरा॥ इति। अत्रापि लेखनप्रतीतिः लभ्यते।

5. क्रि.पू. सप्तमशतके स्थितस्य महर्षेः पाणिनेः धातुपाठे, "लिख अक्षरविन्यासे" इति धातुः दृश्यते। एवमष्टाध्याय्याः तृतीयाध्यायस्य प्रथमपादे "लिपिसिचिह्वश्च" इति सूत्रं लभ्यते। तत्र लिपिकारः, लिबिकारः इति पदे लभ्येते ययोः लेखनस्य वृत्तित्वेनोपयोगः स्पष्टः भवति।

6.क्रि.पू. तृतीयशतके रचितकौटिलीयार्थशास्त्रे लिपिविचारः कृतः।

7. कालिदासस्य अभिज्ञानशाकुन्तले - "एतस्मिन् सुकुमारे नळिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं कुरु" इति लेखनप्रक्रिया दृश्यते।

8. नैषधीयचरिते- "अयं दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं ललाटेऽर्थिजनस्य जाग्रतीम्" इति लिपिप्रस्तावः दृश्यते।

9. वाराहीतन्त्रे- "मुद्रालिपिः शिल्पलिपिर्लिपिर्लेखनिसम्भवाः। गुण्डिकाघुणसम्भूता लिपयः पञ्चधा स्मृताः"॥ इति लिपिविभागः कृतः।

10. योगिनीतन्त्रे- "भूर्जे वा तेजपत्रे वा तथा वा तालपत्रके। विन गुरुं देवेशि पुस्तके कारयेत् प्रिये॥ सम्भवे स्वर्णपत्रे च ताम्रपत्रे च शाङ्करि। अन्यवृक्षत्वचि देवि तथा केतकिपत्रके॥ मृत्ताम्रपत्ररौप्ये वा वटपत्रे वरानने। अन्यपत्रे वा सुदले लिखित्वा यः समभ्यसेत्"॥ इति लेखनसाधनानि प्रस्तुतानि।

11. जैनानां पन्नवण-समवायाङ्गसूत्रे अष्टादशानां लिपीनामुल्लेखः दृश्यते।

12. बौद्धानां ललितविस्तरे चतुष्षष्टिलिपयः उल्लिखिताः।

एवं रीत्या लेखनस्य प्राचीनता क्रि.पू. चतुर्थशतमानपर्यन्तमाधारसहितं प्राप्यते। इत्थञ्च लिपिः अर्वाचीनाविष्कारस्तु न, अस्मत्प्राचीनाः अपि लिपिज्ञाः इति निर्णयः सिद्ध्यति।

1. ಕೃಷ್ಣಯಜುರ್ವೇದಸ್ಯ ಪಞ್ಚಮಕಾಣ್ಡಸ್ಯ ಪ್ರಥಮಪ್ರಶ್ನೇ ಏವಂ ವರ್ತತೇ - "ಖಲು ವಾ ಏತದ್ಯಜ್ಞಮುಖಂ ಯರ್ಹ್ಯೋನದಾಹುತಿರಶ್ನುತೇ ಪರಿಲಿಖತಿ ರಕ್ಷಸಮಪಹತ್ಯೈ ತಿಸೃಭಿಃ ಪರಿಲಿಖತಿ..." ಇತ್ಯೇವಮ್। "ಲಿಖ ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ" ಇತಿ ಧಾತೋಃ ನಿಷ್ಪನ್ನಃ ಲಿಖತೀತಿ ಶಬ್ದಃ ಲಿಪೇಃ ಅಸ್ತಿತ್ವಂ ಸ್ಪಷ್ಟಯತಿ।

2. ಚತುಷ್ಷಷ್ಟಿಕಲಾಸು "ಅಕ್ಷರಕಲಾ" ಇತ್ಯವರ್ತತ, ಯಯಾ ಲಿಪಿರಾಸೀದಿತಿ ಜ್ಞಾಯತೇ।

3. ನಾರದಸ್ಮೃತೌ ಏವಮಸ್ತಿ- "ನಾಕರಿಷ್ಯದ್ಯದಿ ಬ್ರಹ್ಮಾ ಲಿಖಿತಂ ಚಕ್ಷುರುತ್ತಮಮ್। ತತ್ರೋಽಯಮಸ್ಯ ಲೋಕಸ್ಯ ನಾಭವಿಷ್ಯಚ್ಛುಭಾಗತಿಃ॥ ಬ್ರಹ್ಮಣಃ ಲೇಖನಂ ಲಿಪ್ಯಾ ಏವ ಸಮ್ಭವತೀತ್ಯಾಶಯೋಽಸ್ಯ।

4. ವರದರಾಜಃ ಸ್ವೀಯೇ ವ್ಯವಹಾರನಿರ್ಣಯೇ ಲಿಖತಿ- ಷಾಣ್ಮಾಸಿಕೇತಿ ಸಮಯೇ ಭ್ರಾನ್ತಿಃ ಸಞ್ಜಾಯತೇ ಯತಃ। ಧಾತ್ರಾಕ್ಷರಾಣಿ ಸೃಷ್ಟಾನಿ ಪತ್ರಾರೂಢಾನ್ಯತಃ ಪುರಾ॥ ಇತಿ। ಅತ್ರಾಪಿ ಲೇಖನಪ್ರತೀತಿಃ ಲಭ್ಯತೇ।

5. ಕ್ರಿ.ಪೂ. ಸಪ್ತಮಶತಕೇ ಸ್ಥಿತಸ್ಯ ಮಹರ್ಷೇಃ ಪಾಣಿನೇಃ ಧಾತುಪಾಠೇ, "ಲಿಖ ಅಕ್ಷರವಿನ್ಯಾಸೇ" ಇತಿ ಧಾತುಃ ದೃಶ್ಯತೇ। ಏವಮಷ್ಟಾಧ್ಯಾಯ್ಯಾಃ ತೃತೀಯಾಧ್ಯಾಯಸ್ಯ ಪ್ರಥಮಪಾದೇ "ಲಿಪಿಸಿಚಿಹ್ವಶ್ಚ" ಇತಿ ಸೂತ್ರಂ ಲಭ್ಯತೇ। ತತ್ರ ಲಿಪಿಕಾರಃ, ಲಿಬಿಕಾರಃ ಇತಿ ಪದೇ ಲಭ್ಯೇತೇ ಯಯೋಃ ಲೇಖನಸ್ಯ ವೃತ್ತಿತ್ವೇನೋಪಯೋಗಃ ಸ್ಪಷ್ಟಃ ಭವತಿ।

6.ಕ್ರಿ.ಪೂ. ತೃತೀಯಶತಕೇ ರಚಿತಕೌಟಿಲೀಯಾರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರೇ ಲಿಪಿವಿಚಾರಃ ಕೃತಃ।

7. ಕಾಲಿದಾಸಸ್ಯ ಅಭಿಜ್ಞಾನಶಾಕುನ್ತಲೇ - "ಏತಸ್ಮಿನ್ ಸುಕುಮಾರೇ ನಳಿನೀಪತ್ರೇ ನಖೈರ್ನಿಕ್ಷಿಪ್ತವರ್ಣಂ ಕುರು" ಇತಿ ಲೇಖನಪ್ರಕ್ರಿಯಾ ದೃಶ್ಯತೇ।

8. ನೈಷಧೀಯಚರಿತೇ- "ಅಯಂ ದರಿದ್ರೋ ಭವಿತೇತಿ ವೈಧಸೀಂ ಲಿಪಿಂ ಲಲಾಟೇಽರ್ಥಿಜನಸ್ಯ ಜಾಗ್ರತೀಮ್" ಇತಿ ಲಿಪಿಪ್ರಸ್ತಾವಃ ದೃಶ್ಯತೇ।

9. ವಾರಾಹೀತನ್ತ್ರೇ- "ಮುದ್ರಾಲಿಪಿಃ ಶಿಲ್ಪಲಿಪಿರ್ಲಿಪಿರ್ಲೇಖನಿಸಮ್ಭವಾಃ। ಗುಣ್ಡಿಕಾಘುಣಸಮ್ಭೂತಾ ಲಿಪಯಃ ಪಞ್ಚಧಾ ಸ್ಮೃತಾಃ"॥ ಇತಿ ಲಿಪಿವಿಭಾಗಃ ಕೃತಃ।

10. ಯೋಗಿನೀತನ್ತ್ರೇ- "ಭೂರ್ಜೇ ವಾ ತೇಜಪತ್ರೇ ವಾ ತಥಾ ವಾ ತಾಲಪತ್ರಕೇ। ವಿನ ಗುರುಂ ದೇವೇಶಿ ಪುಸ್ತಕೇ ಕಾರಯೇತ್ ಪ್ರಿಯೇ॥ ಸಮ್ಭವೇ ಸ್ವರ್ಣಪತ್ರೇ ಚ ತಾಮ್ರಪತ್ರೇ ಚ ಶಾಙ್ಕರಿ। ಅನ್ಯವೃಕ್ಷತ್ವಚಿ ದೇವಿ ತಥಾ ಕೇತಕಿಪತ್ರಕೇ॥ ಮೃತ್ತಾಮ್ರಪತ್ರರೌಪ್ಯೇ ವಾ ವಟಪತ್ರೇ ವರಾನನೇ। ಅನ್ಯಪತ್ರೇ ವಾ ಸುದಲೇ ಲಿಖಿತ್ವಾ ಯಃ ಸಮಭ್ಯಸೇತ್"॥ ಇತಿ ಲೇಖನಸಾಧನಾನಿ ಪ್ರಸ್ತುತಾನಿ।

11. ಜೈನಾನಾಂ ಪನ್ನವಣ-ಸಮವಾಯಾಙ್ಗಸೂತ್ರೇ ಅಷ್ಟಾದಶಾನಾಂ ಲಿಪೀನಾಮುಲ್ಲೇಖಃ ದೃಶ್ಯತೇ।

12. ಬೌದ್ಧಾನಾಂ ಲಲಿತವಿಸ್ತರೇ ಚತುಷ್ಷಷ್ಟಿಲಿಪಯಃ ಉಲ್ಲಿಖಿತಾಃ।

ಏವಂ ರೀತ್ಯಾ ಲೇಖನಸ್ಯ ಪ್ರಾಚೀನತಾ ಕ್ರಿ.ಪೂ. ಚತುರ್ಥಶತಮಾನಪರ್ಯನ್ತಮಾಧಾರಸಹಿತಂ ಪ್ರಾಪ್ಯತೇ। ಇತ್ಥಞ್ಚ ಲಿಪಿಃ ಅರ್ವಾಚೀನಾವಿಷ್ಕಾರಸ್ತು ನ, ಅಸ್ಮತ್ಪ್ರಾಚೀನಾಃ ಅಪಿ ಲಿಪಿಜ್ಞಾಃ ಇತಿ ನಿರ್ಣಯಃ ಸಿದ್ಧ್ಯತಿ।

By Radha Raghunathan

Ksemarāja's Pratyabhijñāhṛdayam – (Maṅgala-śloka)

(continued from previous edition)

Benedictory Verse (Maṅgala-śloka) – (Part 2)

नमः शिवाय सततं पञ्चकृत्यविधायिने ।
चिदानन्दघनस्वात्मपरमार्थावभासिने ॥1॥

We saw the maṅgala-śloka and its translation in the last issue of Mātrikā. Now we shall see the translator's explanation of the verse.

Explanation :-

The maṅgala-śloka describes Śiva as both the Highest Self and the Highest goal, and the nature of the Highest Self which is Śiva, and the individual self as Consciousness and Bliss. In short, the maṅgala-śloka conveys that the Highest Self and the Highest goal, and the Highest Self and the individual self are identical.

The word (सततम्) means 'always.' It is used in the sense of 'eternal / eternally' and can be read with both 'adoration' (namaḥ – नमः) and 'one who governs the five processes.' That is, it can be read as (i) 'eternal adoration to Śiva' (pañcakṛtyavidhāyine śivāya satataṁ namaḥ śivāya – शिवाय सततं नमः|), and as (ii) 'adoration to Śiva who eternally governs the five processes' (satataṁ pañcakṛtyavidhāyine śivāya namaḥ – सततं पञ्चकृत्यविधायिने शिवाय नमः|). The first reading would suggest that the reader pays obeisance always to the Lord. The second reading would mean that the Lord is engaged in the five processes always.

The five processes (pañcakṛtya… – पञ्चकृत्य…) of Lord Śiva are creation (sṛṣṭi – सृष्टिः) of the universe and all beings, maintenance of what is created (sthiti – स्थितिः), dissolution of the universe (saṁhāra – संहारः), concealment (vilaya – विलयः or pidhāna – पिधानः) of the real nature of the self, and grace (anugraha – अनुग्रहः) to recognize one's true nature.

The term 'mass of Consciousness and Bliss' (cidānanda-ghana… – चिदानन्दघन…; cit – चित् – Consciousness; ānanda – आनन्दः – Bliss) is applicable both to Śiva and to the individual self. The term 'mass of Consciousness and Bliss' (cidānanda-ghana… – चिदानन्दघन…) is better understood when we see the meaning of the term svātma-paramārtha (स्वात्मपरमार्थ).

The term svātma (स्वात्मा…) has the meanings of 'one's nature' and 'one's self.' And, the word paramārtha… (परमार्थ…) has the meanings of 'the Highest Reality' and 'the Highest goal.' Therefore, the term svātma-paramārtha (स्वात्मपरमार्थ) can be understood in more than one way, and rightfully so, as (i) 'the Highest Reality whose nature [is (cidānanda-ghana)],' (ii) 'the Highest Reality, which is the Highest Self, that is Śiva,' (iii) 'the Self, that is Śiva, which is the Highest goal / value,' and (iv) 'the [individual] self which is the Highest Self, that is Śiva.' The fourth meaning shows the identity of the individual self and the Highest Self in their nature as Consciousness and Bliss. This is the 'recognition' that is sought to be taught in the text of Pṛ.hṛ.

The term avabhāsin (अवभासिन्) means 'one who shines, one who is effulgent.' Though the word is self-explanatory, when read with the term svātma… (स्वात्मा…) as svātmāvabhāsin (स्वात्मावभासिन्), it conveys the nature of the Self as 'one who is self-effulgent, one who is self-illumining.'

Our publications :-

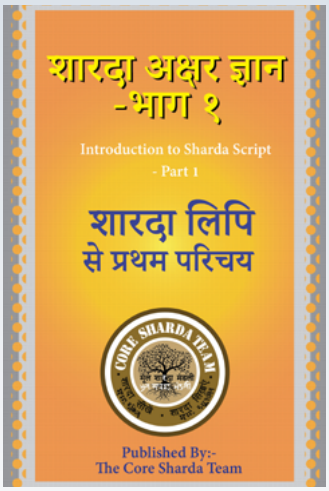

Price Rs 100/-

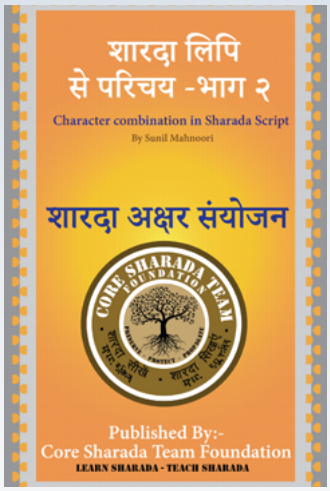

Price Rs 100/-

New Release

Price Rs 175/-

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

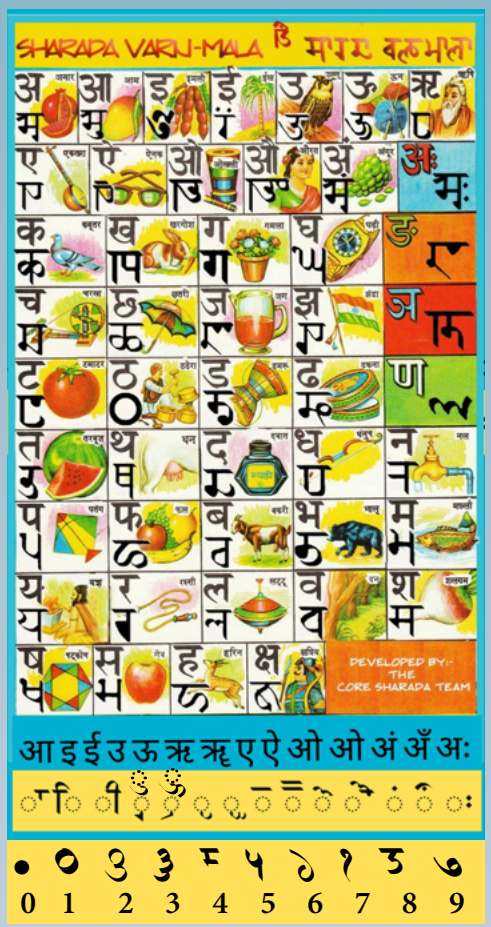

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank,Airport Rd.,
Bangalure
Account No: 50200054809336
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206
12-Clause (iv) of first provison to sub-section (5) of section 80G

Memorandum of Understanding (MoU) is signed on 9rd July, 2021 between CST & Centre for Incubation, Innovation, Research and Consultancy, Jyothy Institute of Technology.Bangalore. Activities and programmes under this MoU may consist of:

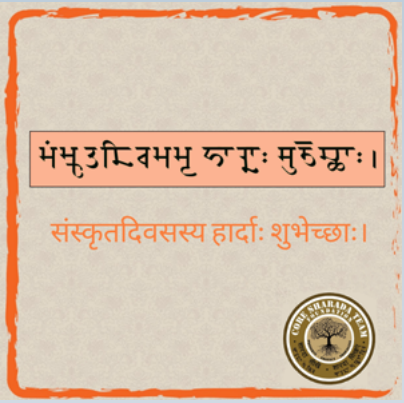

1. Support for development of optical character recognition for Sharda script.
2. Supporting each other's training activities by participating in programs providing technical advice, facilitating logistical resources, or providing content for those project.
3. Lectures by the experts of both the parties for mutual benefit
4. Joint research activities.
5. Joint Product Development Program.
6. Mentorship Programs
7. Exchange of staff for the purpose of knowledge sharing.

Activity Cart Of Previous Months

1) MOU was signed with Bangalore University on the OCR project for auto recognition of Sharada script.
2) Completion of Sharada basic learning batch 44, 45 and 46
3) Core Sharada team member Ms Veronica Peer was awarded for her contribution towards the revival of Sharada lipi.
4) Recognition of sharada lipi and core sharada team by Sh. Anupam Kher.
5) Sharada lipi and efforts of core sharada team got space in Kashmir news

For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539
instagram.com/coreshardateam
shardalipi.com
twitter.com/CoreSharada
maatrika.cst@gmail.com
Phone - 98301 35616 / 90089 52222